प्रकाशक के नामे किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर

सेवा में,

प्रबंधक,

अक्षर प्रकाशन

नई दिल्ली-02

विषयः- किताब आ पुस्तक सूची मँगावे खातिर।

महाशय,

निवेदन बा कि हम आई.एस-सी. के विद्यार्थी बानी। मेडिकल परीक्षा के तैयारी कर रहल बानी। आई.एस-सी आ मेडिकल परीक्षा से संबंधित हमरा किताब खरीदे के बा। रऊरा अपना इहाँ से प्रकाशित पुस्तकन के सूची नीचे लिखल पता पर भेज दीहीं। साथे एह बात के भी सूचना देहब कि पुस्तक खरीद पर कतना प्रतिशत छूट मिली।

एकरा खातिर राऊर कृतज्ञ रहब।

विश्वासभाजन

श्री नारायण

हमार पत्राचार के पता

श्री नारायण

द्वारा-श्री उमाकान्त यादव

मो+पो -घोघरडीहा

जिला- मधुबनी

बिहार।

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प चुनीं।

(क) पत्र क प्रकार के होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ख) पत्र के अंग होला

(अ) एगो (ब) दूगो (स) तीन गो (द) चार गो।

(ग) पत्र में संबोधन बदलेला

(अ) स्थान के अनुसार (ब) लिखे-पावेवाला के संबंध के अनुसार
(स) लिखेवाला के विचार के अनुसार

(द) पावेवाला के पद के अनुसार।

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(संस्थान भा कार्यालय, अभिनिवेदन' भा 'समापन, व्यक्तिगत पत्र, व्यावसायिक पत्र दहिना, बाँया, दूत)

(क) सामाजिक भा व्यक्तिगत पत्र कवनो संबंधी के इहवाँ लिखल जा ला जबकि ..... संस्थान के प्रमुख के पासे लिखल जा ला।

(ख) चिट्ठी के चार अंग मानल जाला। सिर के 'आरंभ', गरदन के 'अभिवादन', धड़ के 'विचार' आउर पैर के .....कहल जा सके ला।

(ग) अंत भा समापन में पत्र भा अर्जी के अंत में .....कोना में पत्र पावेवाला के साथ आपन संबंध के विनम्रता पूर्वक उल्लेख करे के चाहीं।

(घ) चिट्ठी के हाड़-मांस विहीन जीवंत ..... कहल जाला।

(ङ) अर्जी भा प्रार्थना पत्र कवनो .....के प्रमुख के नामे लिखल ला।

(च) पाती के आरंभ में जवना स्थान से चिट्ठी लिखल जा रहल बा .....कोना में ओह स्थान के नाम आ ओकरा नीचे तारीख लिखल जाला।

3. नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) चिट्ठी के परिभाषा लिखीं।

(ख) चिट्ठी आ अर्जी में का अंतर बा।

(ग) चिट्ठी के कगो आ कवन कवन अंग बा। ओहनी के बारे में संक्षेप में लिखीं।

(घ) चिट्ठी के का काम ह?

(ङ) प्रभावशाली चिट्ठी में कवन--कवन गुण होखे के चाहीं।

क्रियाभ्यास

(क) किसिम-किसिम के चिट्ठी आ अर्जी के संग्रह करीं।

अध्याय 18

संक्षेपण

संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के सुरक्षित रखल जाला। आ ओह मूल भाव के स्पष्टीकरण में आइल प्रासंगिक-अप्रांसगिक उदाहरण, मुहाबरा, विशेषण अलंकार आदि जे भाव के विश्लेषण करे में सहायक रहेला ओकनी के छोड़ दिहल जाला आउर मूल भाव के पास पास ला दिहल जाला।

सुघड़ संक्षेपण में नीचे लिखल गुण होखे के चाहीं-

1. **मूल के पूर्ण सार**-संक्षेपण मूल के सार होला आ पूर्ण भी होखेला। संक्षेपण के रूप अइसन होखे के चाहीं कि ओकरा के पढ़ला के बाद मूल पढ़े के जरूरत ना पड़े आ सब भाव के जानकारी मिल जाव।

2. **क्रमबद्धता**-संक्षेपण में मूल के सब विचार एगो निश्चित क्रम में रखल जाला।

3. **संक्षिप्तता**-संक्षेप मूल संक्षेपण के अनिवार्य शर्त ह। संक्षेप के अर्थ लगावल जाला मूल के तिहाई।

4. **स्पष्टता**-भाव के स्पष्टीकरण के खातिर वक्ता भा लेखक अपना मूल विचार के संगे-संगे अनेक उदाहरण, अलंकार, विशेषण जोड़ देलन। बाकिर इहे सफाई पाठक भा श्रोता खातिर बोझा बन जाले। सफल

संक्षेपणकर्ता फिजूल के उदाहरण, असंगत शब्द, पद भा वाक्यांश के हटा के मूल भाव के सरल आ स्पष्ट रूप में रख देवे के काम करेलन।

5. शुद्धता- संक्षेपण में शुद्धता के बड़ा महत्व बा। शुद्धता सिर्फ शब्द के ही ना भाव के भी होखे के चाहीं। अपना तरफ से कवनो मिलावट ना होखे के चाहीं। नवीनता से बचे के चाहीं।

6. प्रभावात्मकता- मूल के प्रभाव आ संक्षेपण के प्रभाव में अंतर ना होखे के चाहीं। शब्द के संख्या घटावल कवनो बड़ काम ना ह। शब्द घटे बाकिर प्रभाव ना घटे ई बड़ काम ह। मूल पाठ में लेखक जवना बात पर बल देले होखस ओही बात पर संक्षेपणकर्ता के भी बल होखे के चाहीं ना कि कतही अउरी। ना त लेखक के साथ अन्याय हो जाई।

संक्षेपण करे के नियम

1. सबसे पहिले मूल पाठ के बार-बार आ तब तक पढ़े के चाहीं जब तक कि ओकरा भाव के खुलासा ना हो जाव।

2. मूल के भाव समझला के बाद ऊ-ऊ शब्द, पद, वाक्यखण्ड, वाक्य के चिन्हित करे के चाहीं जवना के संबंध मूल विचार से सीधा जुड़ल होखे।

3. संक्षेपण के अंतिम रूप देवे के पहिले रेखांकित पद, वाक्यखंड के आधाार पर रूपरेखा बनावे के चाहीं फिर ओकरा में उचित आ आवश्यक संशोधान जोड़-घटाव क के क्रमिक रूप से लगभग एक तिहाई शब्दन में लिख देबे के चाहीं।

4. ई बात के खास ख्याल रखे के चाहीं कि संक्षेपण मूल के संक्षेप ह ना कि मूल के बारे में राऊर विचार ह। एह से संक्षेपण में आपना टीका-टिप्पणी, मत, खंडन, मंडन के भाव से तटस्थ रहे के चाहीं।

5. संक्षेपण में अवतरण के लेखक के नाम, पता आ परिचय भी अगर होखे त लिखे के चाहीं।

6. प्रारूप के संक्षिप्त रूप देबे के पहिले मूल अवतरण के शब्द संख्या गिन लेबे के चाहीं। संक्षेपित शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे त लगभग एक तिहाई में संक्षेपण करे के चाहीं। एक तिहाई के मतलब गणित के फार्मूला के अनुसार 1/3 ना होखेला। शब्द घट-बढ़ भी हो सकेला मगर घट-बढ़ के भी सीमा होला अधिक से अधिक 5 प्रतिशत कम भा बेशी शब्द हो सकेला। ओकरा आगे अड़चन होई।

7. संक्षेपण के एगो सरल सटीक, सार्थक आकर्षक आ भाव से संबन्धित शीर्षक देवे के चाहीं। शब्द संख्या के उल्लेख कर देबे के चाहीं।

8. संक्षेपण अपना भाषा में आऊर जवना काल में अवतरण होखे ओही काल में करे के चाहीं।

संक्षेपण करे में धयान देबे के चाहीं

1. संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग से बचे के चाहीं।

2. संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ

प्रगट में सहायक होखे, शेष के छोड़ देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द रख देबे के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं कि मूल के अर्थ में उलट फेर ना होवे।

3. संक्षेपण प्रत्यक्ष कथन शैली में ना लिखके अप्रत्यक्ष कथन शैली में लिखे के चाहीं।

4. संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से बचे के चाहीं।

5. भाषा व्याकरण सम्मत होखे के चाहीं।

6. संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह होखे के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

कुछ उदाहरण

उदाहरण-1

प्रकृति के अनेक रूप बा। प्रकृति हमनी के सामने अलग-अलग आ अनंत रूप में आवेली। कहीं सरस, सुन्दर, सुमधुर आ सुसज्जित रूप में त कहीं कर्कश, बेडौल भा भयानक रूप में। कहीं भव्य, विशाल भा विचित्र रूप में त कहीं उग्र, विकराल आ भयंकर रूप में। सच्चा कवि के हृदय प्रकृति के सब रूप में लीन हो जाला। काहे कि ओकर लगाव के कारण आपन खास सुख-भोग ना हो के चिरसाहचर्य द्वारा प्रतिष्ठित वासना होला। जे कवि प्रकशति के प्रफुल्ल प्रसून प्रसाद के सौरभ संचार, मकरन्दलोलुप मधुकर के गुंजार, कोकिलकूजित निकुंज आ शीतल सुख स्पर्श समीर के

ही चर्चा करेलन उनका के विषयी भा भोगलिप्सु कहल जाला। एही तरह से जे मुक्ताकाश हिम-विन्दुमंडित मरकताभ शाद्वजाल, विशाल गिरि शिखर से गिरते जलप्रपात के गंभीर गति से उठत सीकर नीहारिका के बीच विविध वर्णी स्फुरण के विशालता, भव्यता आऊर विचित्रता में ही सबकुछ पावेलन, उ तमाशबीन हवन, सच्चा भावुक आ सहृदयी कवि ना हो सकेलन। प्रकृति के साधारण-असाधारण, सुन्दर-कुरूप, सुडौल-बेडौल सब प्रकार के रूप के वर्णन बाल्मीकि, कालिदास, भवभूति आदि संस्कृत के प्राचीन कविगन में मिलेला। पिछला खेवा के कविलोग मुक्त रचना में प्रकृति के वस्तुन के अलग-अलग उल्लेख मात्र उद्दीपन के दशष्टि से कइलन। प्रबंध रचना में थोड़ -ढेर सॅश्लिष्ट रूप में भी चित्रण कइलन, बाकिर प्रकृति के विशेष रूप विभूति के लेके ही कइलन।

(शब्द संख्या-212)

प्रकृति आऊर कवि

प्रकृति के दू गो रूप बा- सुन्दर आ असुन्दर। सच्चा कवि के हृदय दूनों रूप में रमेला। जे कवि खाली प्रकृति के बाहरी सौंदर्य के वर्णन करे ऊ सच्चा कवि न होके तमाशबीन भा भोगलिप्सु कहालन। प्रकृति के सच्चा आ सम्पूर्ण रूप के चित्रण संस्कृत के प्राचीन कविजन प्रबंध भा मुक्तक सरल भा सॅशिलष्ट दूनों रूप में कइलन। बाद के कवि सिर्फ उद्दीपन रूप में ही वर्णन कर पइलन।

(संक्षेपित शब्द संख्या-69)

उदाहरण-2

काश्मीर से कन्याकुमारी तक फैलल आपन देश भारत आकार आऊर आत्मा दूनों दृष्टि से महान् आऊर सुन्दर देश बा। एकर बाह्य सौंदर्य विविधता के सामंजस्य पूर्ण स्थिति ह, त आत्मा के सौंदर्य विविधता में छिपल एकता के अनुभूति करावेला। चाहे कभी ना गले वाला हिम के प्राचीर होखे, चाहे कभी न सूखे न जमे वाला अतल सागर, चाहे सूर्य के किरण रेखा से खचित धारती के हरियाली होखे, चाहे एकरस शून्यता ओढ़े मरूस्थल, चाहे घहरात घन-करिया बदरी होखे, चाहे लपट के साँस छोड़त बवंडर, सब आपन भिन्नता में भी एक ही देवता के विग्रह के पूर्णता प्रदान करेले। जइसे मूर्ति के कवनो एगो अंग टूट के संपूर्ण देव-विग्रह के खण्डित कर देला ओइसहीं अपना देश के अखण्डता खातिर विविधाता के स्थिति ह। अगर एह भौगोलिक विविधाता में व्याप्त सांस्कृतिक एकता न होइत, त इ देश विभिन्न नदी, पर्वत, वन के विचित्र संग्रह भर बन के रह जाइत। बाकिर एह देश के प्रतिभा एकरा आत्मा के रसमयता में प्लावित कइके एकरा के विशिष्ट व्यक्तित्व प्रदान कइले बाड़े। जेह से इ देश आसमुद्र एगो नाम के परिधि में बँध जाला।

(शब्द संख्या-178)

भारत अनेकता में एकता

आपन देश भारत अनेक भौगोलिक आ प्राकृतिक विविधता से युक्त विशाल देश बा। ऊपरी विविधता के बावजूद, सांस्कृतिक एकता के

कारण एह देश के व्यक्तित्व अखण्ड बा, आत्मा एक बिआ। अगर आंतरिक एकता ना रहीत त इ देश अनेक विचित्रता के संग्रह भर बन के रही जाइत बाकिर अइसन नइखे इ सब विभिन्नता में भी एके के विभिन्न रूप ह।

(संक्षेपित शब्द संख्या-60)

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर ✓आ गलत पर ✗ के निसान लगाईं।

(क) संक्षेपण में मूल भाव भा विचार के बदल दिहल जाला। ( )

(ख) कवनो मूल भाव भा विचार में बिना कवनो काट-छाँट कइले मूल के ग्रहण आ फिजूल के त्याग कइके कम भा छोट करे के भाव भा क्रिया के संक्षेपण कहल जाला।' ( )

(ग) संक्षिप्त शब्द के संख्या के उल्लेख ना भइल होखे ते लगभग एक चौथाई में संक्षेपण करे के चाहीं। ( )

(घ) संक्षेपण के शीर्षक ना देवे के चाहीं। ( )

(ङ) 1998 में चार गो शब्द बा। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(रख देबे, अप्रत्यक्ष, होखे, ना करे, से बचे, प्रत्यक्ष, के छोड़)

(क) संक्षेपण में विशेषण, क्रियाविशेषण आ आलंकारिक भाषा के प्रयोग .....के चाहीं।

(ख) संक्षेपण में उहे मूल शब्द के रखे के चाहीं जे भाव के अर्थ बतावे

में सहायक होखे, शेष .....देबे के चाहीं भा ओकरा बदला में दोसर शब्द .....के चाहीं बाकिर ई बात के खास धयान रखे के चाहीं।

(ग) संक्षेपण .....कथन शैली में ना लिखके .....कथन शैली में लिखे के चाही।

(घ) संक्षेपण में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग से.....के चाहीं।

(ङ) भाषा व्याकरण सम्मत ..... के चाहीं।

(च) संक्षेपित रूप में भाषा प्रवाह .....के चाहीं, अइसन कबहूँ आ कतहूँ ना लागे कि अलग-अलग विचार एक साथ चिपका दिहल गइल बा।

3. नयल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) संक्षेपण के परिभाषा लिखीं।

(ख) शब्द गिने के का तरीका बा।

(ग) संक्षेपण के का काम ह।

(घ) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन-कवन गुण होखे के चाहीं? वर्णन करीं।

क्रियाभ्यास

(क) अपना पाठ्यक्रम से संबंधित प्रश्न के उत्तर लिख के ओकर संक्षेपित रूप भी लिखे के प्रयास कइल जाई त परीक्षा अवधि में बड़ ला भ होई कोसिस करीं।

अध्याय 19

पल्लवन

'संक्षेपण' के उल्टा होला 'पल्लवन'। संक्षेपण में जहवाँ दिहल अवतरण के निश्चित शब्द संख्या भा तिहाई में सीमित क दिहल जाला उहवाँ पल्लवन में दिहल सूत्रवाक्य भा बीज वाक्य के विस्तार कइल जाला।

पल्लव के अर्थ होला-'पता'। बीज अंकुरित होला, डाल डेहूँगी से होत पात-पात तक छितरा जाला। ओइसहीं बीज रूप में दिहल सूत्रवाक्य के अंकुरित शाखित-प्रशाखित करत पता तक पहुँचावे के क्रिया के **पल्लवन** कहल जाला। एकरा के परिभाषा रूप में कहल जा सकेला कि "पल्लवन ऊ रूपरचना विधान ह जवना में कवनो बीज वाक्य भा सूत्र वाक्य के भीतर छिपल भाव भा विचार के खोल के रखल जाला"। पल्लवन के वृद्धिकरण, विस्तारण, विस्तारित रूप में भाव विस्तार आ भाव पल्लवन भी कहल जाला।

पल्लवन करे में ई बात के धयान रखे के चाहीं-

दिहल सूत्रवाक्य के अर्थ के ठीक से समझला आ समझे लायक बनवला बिना सुन्दर आ प्रभावशाली पल्लवन ना हो सकेला।

1. पल्लवन के बीजवाक्य के बार-बार पढ़ला-गुनला-सोचला के बाद जवन-जवन विचार मन में उठे ओकरा के कलमबद्ध क लेबे के चाहीं।
2. कलमबद्ध भाव भा विचार के क्रमबद्ध क के प्रत्येक विचार के

व्याख्या भा विस्तारित करे के चाहीं। विस्तारित करे में ऊ सब तत्त्वन के उपयोग अलंकरण, मुहावरा, कहावत, उद्धरण, उदाहरण, आ दृष्टांत देबे के चाहीं जेकर संक्षेपण में त्याग कइल जाला।

3. विस्तारित विचार भा भाव के सब अनुच्छेद **क्रमबद्ध आऊर सुसंगत रहे** के चाहीं ना कि अइसन लागे कि अलग-**अलग अनुच्छेद** के लाकं सटा दिहल गइल बा।

4. ई बात के भी धयान राखे के चाहीं कि चिंतन-**मनन से निकलल भाव** भा विचार के विस्तार त होखे बाकिर ओकर **खण्डन--मंडन** ना करे के चाहीं कवनो एगो सुस्पष्ट आ मान्य विचार **लेके आगे बढ़े** के चाहीं।

5. पल्लवन के अर्थ ह विषय के विस्तार। विस्**तार के मतलब** ई ना भइल कि एके बात के बार-बार दोहरावल जाव, **बलुक ई भइल** कि ओह विचार पर भिन्न-भिन्न नजरिया से विचार **कइल जाव।**

6. पल्लवन के विस्तार कतना होखे, विद्वानन **के बीच बखेड़ा** पैदा क दिहले बा। बाकिर जादे लोग के विचार इहे बा कि पल्लवन के आकार निबंधा से छोटा होखे के चाहीं। अगर पंक्ति में सीमित कइल जाव त एकर आकार 10 से 15 पंक्ति तक सीमित रखे के चाहीं।

7. पल्ल्वन खातिर जरूरी बा कि उद्धरण के गूढ़ अर्थ स्पष्ट हो जाव, गूढ़ अर्थ समझे खातिर बार-बार पढ़े के चाहीं।

8. भाषा सरल होखे के चाहीं। कठिन शब्द के प्रयोग आ आलंकरिक चमत्कार पैदा करे के प्रयास में अर्थ-ग्रहण में बाधाा ना पड़े एह बात के भी ख्याल रखे के चाहीं।

9. पल्लवन में मूल भा गौण भाव भा विचार पर टीका-टिप्पणी आ आलोचना ना करे के चाहीं।

10. विस्तारण करे के समय मूल विचार विन्दु से अलग ना भटके के चाहीं घूम फिर के मूल विन्दु पर नजर गड़वले रहे के चाहीं।

11. पल्लवन में शीर्षक ना देबे के चाहीं।

12. पल्लवन यथासंभव वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरुष में लिखे के चाहीं।

13. पल्लवन में केहु के कहल भा कहीं लिखल पंक्ति अगर प्रासंगिक होखे त उद्धरण रूप में उपयोग में लावे के चाहीं।

14. पल्लवन के अंतिम रूप देवे के पहिले प्रारूप बना लेबे के चाहीं।

15. पल्लवन में प्रश्नवाचक वाक्यन के उपयोग आ ओकर स्पष्टीकरण के जरिये विस्तार करे के चाहीं।

कुछ उदाहरण

अकेले चना भाड़ ना फोड़ी

कहे के त लोग कहबे करेलन कि अपने ऊपर विश्वास करे के चाहीं। अकेले चले के चाहीं। आपन हाथ जगरनाथ पर भरेसा होखे के चाहीं। इ भी सच बा कि आदमी एह धारती पर आवेला अकेले आ जइबो करेला अकेले। बाकिर इ दुनिया में सब केहू सबकुछ अकेले क लीही असंभव ना त कठिन जरूर बा। अकेले चल के आदमी सफल जरूर बन सके ला बाकिर महान ना बन सके ला। जतना महान लोग दुनिया में भइलन

ऊ कवनो काम के शुरूआत अकेले जरूर कइलन बाकिर सफलता के शिखर पर चढ़ पइलन तबे जब समाज से सहयोग लेहलन। संघ बनाके आपन काम आगे बढ़इलन, एही से कहल जाला **'संघे शक्ति कलियुगे'** मतलब कलियुग में संगठन में ही शक्ति के निवास होखेला।

एह संबंध में अनेक पुरान कथा प्रचलित **बाड़ी स। एगो कथा बा कि** एगो किसान के चार गो बेटा रहले स। चारों आपस में हरमेशा लड़त-झगड़त रहले स। किसान ओहनी के लड़ाई-झगड़ा से परेशान रहत रहल। जब मरे-मरे भइल त सब लइकन के अपना पासे बोलवल स। सभन से एकग गो छड़ी मंगवइल स। सब छड़ी के एक साथ बन्हवा के बारी-बारी से बंडल सभन के देके कहलस के एकरा के जे तूर दी सब संपति ओकर। लइका लोग लगलन तूरे केहू ना तूर सकल। तब ऊ बंडल खोलवा के एकग गो छड़ी बाँट दिहलस आ कहलस कि अब आपन-आपन छड़ी तूर लोग। सभे तूर देलस, तब ऊ बतइलस कि देख लोग एक साथे-एक में मिलके रहब जा त केहूँ तोहनी लोग के सताइ ना दबाई आ खूब प्रगति करब लोग। अगर अइसहीं लड़त झगड़त रहब जा त केहू दबा दिही, एकता में बल होखेला मिलजुल के रहिह जा, इही हमार संपति ह, सबलोग बाँट ल जा।

एकता आऊर सहयोग में बड़ा बल होखेला। एकता आ सहयोग के बल पर दुनिया में असंभव लागेवाला काम भी आसानी से भ गइल बा। कबूतर आ शिकारी के कहनी जानते बानी जा। गाँधी जी भी लाखों बार जेहल जइतन अगर जनता से सहयोग ना ले ले रहितन त देश आजुओ गुलामे बनल रहित।

एकता आ सहयोग में समाइल एही बल के देख के कहल जाला अकेला चना भाँड़ न फोड़े। अकेल चना के भूँजे खातिर भाड़ी में डालल जाय आ कतनो गरम बालू डालल जाए चना फूट ना सकेला। बाकिर जब थोरकी आऊर चना डाल दिहल जाला त सब चना फूट जाला। जादे चना हो जाला त ओहनी के भड़भड़हट से भाँड तक फूट जाला। एही से कवनो बड़ भा महान काम क के महान बने के होखे त मिलजुल के काम करे के चाहीं। अकेले सब काम ना हो सके एही से कहल गइल बा अकेले चना भाड़ ना फोड़ सकेला।

का बरखा जब कृषि सुखानी

कवनो काम समय से कइले पर ठीक रहेला। जब कवनो काम समय पर ना कइके समय के बीतला पर कइल जाला तब काम के उपयोगिता त खत्म होइए जाला, सब मेहनत पर पानिओ फिर जाला। जइसे खेती के समय में पानी ना बरिसे त फसल सूखा जाइ। फसल सूखला के बाद कतनो मूसलाधार बारिस होइ ओकर कवनो उपयोग ना रही जाइ। ठीक समय पर वस्तु के उपयोग ना कइला से वस्तु के सार्थकता तक नष्ट हो जाला। उदाहरण के तौर पर कहल जा सकेला कि जइसे कवनो विद्यार्थी बीतत समय के उपेक्षा करत इ कहस कि परीक्षा आई त देख लेहब, अइसहीं करत-करत परीक्षा के समय भी आ जाला उनकर चिंता बढ़े लागेला। ऊ बेचैन हो उठेलन। समय ही ना रही जाला कि पूरा पाठ इयाद क सकस। समय खोअला के पश्चाताप करे लागे लन, सिर धुने लागे लन, बाकिर कुछुओ हो ना पावेला, कवनो फायदा ना हो पावेला, फेल भी हो

जालन काहे? एही से नू कि ऊ अपना समय के उपयोग ना कइलन। समय से पढ़ाई ना कइलन। एही विचार से मिलत अंग्रेजी में भी कहावत प्रचलित बा Time and Tide wait for none समय आ काल केहूँ के प्रतीक्षा ना करे ला। एह से इ बात शत प्रतिशत साँच बा "का बरखा जब कृषि सुखानी।"

बोध प्रश्न

1. सही विकल्प पर (✓) आ गलत पर (✗) के निसान लगाईं।

(क) "पल्लवन संक्षेपण' के समानार्थी होला । ( )

(ख) 'पल्लवन शब्द के उत्पति 'पल्लव' से मानल जाला। ( )

(ग) पल्लवन के अर्थ होला विषय के संक्षेपित कइल। ( )

(घ) 'पल्लवन' में बीजवाक्य के तिहाई शब्द संख्या में सीमित क दिहल जाला। ( )

(ङ) पल्लवन के एगो सरल सटीक, सार्थक, आकर्षक आ भाव से संबधित शीर्षक देवे के चाहीं। ( )

2. खाली जगह के सही विकल्प से भरीं।

(करे, ना करे, सूत्रवाक्य, विस्तार)

(क) 'पल्लवन में भाषा सरल आ .....होखे के चाहीं। विद्वता प्रदर्शन के प्रयास .....के चाहीं।

(ख) पल्लवन में .....सामान्यतः मुहावरा भा कहावत भा कवनो आप्तवचन होला।

(ग) पल्लवन के अर्थ ह विषय के .....।

(घ) पल्लवन में कठिन पद, लंबा-लंबा वाक्यांश भा वाक्य के प्रयोग ..... के चाहीं।

(ङ) पल्लवन में भाव से संबन्धित शीर्षक ..... के चाहीं।

(च) पल्लवन के लेखन वार्तालाप शैली में आ अन्य पुरूष में ..... के चाहीं।

3. नपल-तुलल शब्द में उतर दीं।

(क) पल्लवन के का काम ह।

(ख) प्रभावशाली संक्षेपण में कवन कवन गुण होखे के चाहीं। वर्णन कइल जाए।

क्रियाभ्यास

(क) माई,बाबू,दादा, दादी से भोजपुरी में बिसरल जा रहल कहाउत आ मुहाबरा के पूछ के ओकर पल्लवन कइल जाव।

अध्याय 20

लेखन के विविध आयाम

रिपोर्ताज

'रिपोर्ताज' फ्रेंच भाषा के शब्द ह। एकरा मूल में अंगरेजी के 'रिपोर्ट' शब्द बा। पत्रकारिता के 'रिपोर्टिंग' शब्द से एकर गहिर सम्बन्ध बा। विद्वान लोग रिपोर्ताज के रिपोर्ट के कलात्मक रूप कहेला, साहित्यिक प्रस्तुति बतावेला। एह साहित्यिक गद्य विधा के जनमो दूसरका विश्वयुद्ध के समय भइल बतावल जाला।

रिपोर्ताज के अन्तर्वस्तु, भाषा, शैली आ प्रतिपाद्य के अध्ययन के आधार पर कहल जा सकेला कि समसामयिक घटना-दुर्घटना, जइसे युद्ध, भूकम्प, अकाल, बाढ़, महामारी वगैरह का मानवीय पहलुअन के तथ्यपरक साहित्यिक शैली में अभिव्यक्त समाचार अथवा रिपोर्टिंग के रिपोर्ताज कहल जाला। एकर लेखक पत्रकारिता से जुड़ल केहू साहित्यकार चाहे साहित्यिक प्रतिभा के धनी केहू पत्रकार हो सकेलन।

भोजपुरी साहित्य में रिपोर्ताज हिन्दी के प्रभाव से आइल बा। बाकिर भोजपुरी में एकर लेखन शैली ओह तरह से नइखे उतर सकल जइसन विदेशी साहित्य में बा। परमेश्वर दूबे शाहाबादी के भोजपुरी रिपोर्ताज

संग्रह 'एनक' भोजपुरी के पहिला रिपोर्ताज संग्रह ह। जवना में बाबा बरमेसर नाथ की जै, गंगा माई के भरली अररिया, सोन वा चमचम चमके ना, जय दुर्गा महारानी की वगैरह एगारह रिपोर्ताज संकलित बा। 'ऐनक' के भूमिका में रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' के बेयान बा कि एकर नाँव ऐनक एह से रखाइल बा कि जवना घटना अवसर आ जगह के बरनन एह में बा, ओकर सही सहज चित्र में एह में साफ लउकत, झलकत बा।' एह संग्रह के अनेक रचना के संस्मरणात्मक शैली देख के ई कहल कठिन हो जाता कि ई संस्मरण ह कि रिपोर्ताज। शाहाबादी जी के अलावे डॉ॰ रसिक बिहारी ओझा 'निर्भीक' भोजपुरी में डॉ. विवेकी राय के लिखल रिपोर्ताज आ फीचर मानक मानल जाला।

बोध प्रश्न

1. 'रिपोर्ताज' कवना भाषा के शब्द ह।
2. रिपोर्ताज के बारे में बताईं।
3. भोजपुरी में रिपोर्ताज लेखन के बारे मे बताईं।

फीचर

फीचर पत्रकारिता के अंग ह। ओकर एगो प्रकार ह। फीचर बहुत हद तक रिपोर्ताज जइसन होला। बाकिर, दूनों में फरक ई होला कि रिपोर्ताज में जहँवा कवनो समसामयिक समाचार के अलम लेहल जरूरी होला, उहँवे फीचर लेखन खातिर ई जरूरी ना होखे। दोसरे रिपोर्ताज में कवनो ताजा आ खास घटना-दुर्घटना के मानवीय संवेदना से जोड़ के तुरत लिखे छपवावे होला, ताकि ऊ बासी ना हो जाय। ओकरा पास सामग्री जुटावे खातिर पौराणिक, ऐतिहासिक वगैरह किताब आ दस्तावेज के हीरे-मथे भा घोंके-बाँचे के समय ना होला, जबकि फीचर के लेखक कवनो विशेष विषय के सीधा सही जानकारी के साथ-साथ पौराणिक ऐतिहासिक सामग्रियन के सहारा ले सकेला।

'फीचर' अंगरेजी के शब्द ह। हिन्दी में एकरा खातिर 'रूपक' शब्द चलेला। पत्रकारिता के क्षेत्र में फीचर अथवा रूपक ओह निबन्धात्मक शैली में लिखल रचना के कहल जाला, जवना में लेखक कवनो समयानुकूल महत्वपूर्ण विषय पर मर्यादित आकार में प्रभावी भाषा प्रदान करत विनोदपूर्ण ढंग से आपन विचार प्रस्तुत करेला। प्रभावी फीचर लेखक उहे व्यक्ति हो सकेला, जेकर तेज-तरख नजर रोज-रोज के घटत महत्वपूर्ण घटना पर होखे। फीचर ताजा समचार के अलावे पौराणिक ऐतिहासिक घटना, तिथि, परम्परा, जरूरत वगैरह कवनो विषय पर लिखा सकत बा।

फीचर लेखन के कई गो प्रकार होला, जइसे- वर्णनात्मक, व्यंग्यात्मक, व्याख्यात्मक, चित्रात्मक वगैरह। ई सब निबन्धो के प्रकार हवे स। बाकिर, समय के अनुकूलता आ समसामयिकता के स्तर पर फीचर आ निबन्ध में फरक होला। गाँधी जी का सिद्धान्त पर लिखाईल लेख निबन्ध कहाई त 'आज के परिवेशमें गाँधी का सिद्धांत के भूमिका' विषय पर लिखाइल रचना फीचर के कोटि में आई। के.पी. नारायण के अनुसार- तथ्य आ आँकड़ा के लेके लेख लिखल सहज होला। बाकिर फीचर चाहे रूपक लेखन ओकरा अपेक्षा अधिक कलात्मक होला। एकरा खातिर अनुभूति, भावना, कल्पना आउर अवलोकन सब के जरूरत होला। एके विषय-वस्तु पर निबन्ध आ फीचर लिखा सकता। बाकिर, दूनों के शैली आ प्रतिपादन भिन्न हो जाई निबन्ध में सामान्य तौर पर कवनो खास विषय, समस्या चाहे ओकरा कवनो खास पहलू के महीन आ गहीन अध्ययन पावल जाला त फीचर खातिर ओतना गहराई में ना जाके शब्दने के सहारे अपेक्षित प्रभाव पैदा कइल जाला।'' साहित्यिक पत्रकारिता के बाद दूरदर्शन, सिनेमा, आ प्रेस-मीडिया में आपन जगह बनावे के क्रम में भोजपुरी में फीचर लेखन के परम्परा शुरू हो गइल बा।

बोध प्रश्न

1. **फीचर के का अर्थ होला।**
2. **फीचर कवना भाषा के शब्द ह।**
3. **फीचर लेखन के बारे में बताईं।**

विज्ञापन

विज्ञापन के अर्थ होला-परचा, परिपत्र, पोस्टर, पत्र-पत्रिका चाहे इलेक्ट्रानिक मिडिया, सिनेमा, दूरदर्शन, कम्प्यूटर इन्टरनेट वगैरह द्वारा कवनो विषयवस्तु आ उत्पादन वगैरह के वास्तविक काल्पनिक चाहे आरोपित गुण सब के प्रचार।

आज सउँसे दुनिया विज्ञापन युग में जी रहल बा। एकरा अलावे बस गाड़ी पर, बस-गाड़ी में, बस स्टैंड पर, रेलवे पलेटफार्म पर, सड़क देवालपर चाहे जहाँ कवनो जगह बाँचल बा उहवाँ होर्डिंग, पोस्टर स्टिकर वॉलिग (देवाल पर लिखल के) वगैरह से विज्ञापन के रूप में कवनो चीज के झूठ साँच प्रचार कइल जा रहल बा। मतलब जेने नजर डाली- ओनही विज्ञापने विज्ञापन नजर आवत बा। विज्ञापन शब्द भलही आधुनिक युग के देन होखे बाकिर विज्ञापन चाहे कवनो विषय वस्तु के प्रचार के काम त प्राचीने काल में होत रहल बा। पहिले डुगडुगी बजाके, गाँव के फेरी लगा के, हरकारा के जरिये कवनो चीज के प्रचार कइल जात रहे। बाकिर जइसे जइसे मशीनी जुग आवत गइल- छापाखाना के बाद बेतार के तार रेडियो, टेलीफोन, लाउडसपीकर, टी.वी. विडियो कंप्यूटर आदि के विकास के संगे-संगे विज्ञापन के रूप प्रकार आ आकार बढ़ते गइल। आज के विज्ञापन आ ओकरा ढंग के देख के कहल जा सकेला कि विज्ञापन के एगो उपकरण ह। जनसंचार के माध्यम सब में कवनो विषयवस्तु भा उपकरण उत्पादन वगैरह के प्रचार जवना जरिये कइल जाला, ओकरे के विज्ञापन कहल जाला। प्रचार करे खातिर कुछ सूचना दिहल जरूरी होला। सूचना

देवे के त समाचार कहल जाला। बाकिर समाचार आ विज्ञापन में फरक होला। समाचार से जवन जानकारी चाहे ज्ञानवृद्धि होला ओकर लाभ पाठक भा श्रोता भा दर्शक के होला जबकि विज्ञापन से प्राप्त समाचार पत्र-पत्रिका वगैरह में जवन विज्ञापन छपेला ओकरा के सजावटी (प्रदर्शनात्मक) विज्ञापन कहल जा सकेला। प्रकाशन खातिर कालम आ विज्ञापन के जरिये घेरल जगह का लम्बाई चौड़ाई (क्षेत्रफल) के आधार पर पइसा लिहल जाला। एकर आकार प्रायः बड़ होला। एह सब से एह विज्ञापन में चित्र, मोट टाइप आ प्रिंटिंग ब्लॉक बगैरह के प्रयोग हो सकेला। एह तरह के विज्ञापन के सामग्री सरकारी, गैरसरकारी, प्रशासनिक, व्यापारिक, संस्थागत प्रचार चाहे कवनो कम्पनी का उत्पाद के महिमा बखान कर के विक्री बढ़ावे खातिर होला। छोट-छोट अक्षर वाला छोट-छोट विज्ञापन वर्गीकृत (क्लासीफाइड) विज्ञापन कहल जाला। बिआह नोकरी गुमसुदगी, किराया के मकान, कीना-बेची वगैरह से जुड़ल एह तरह के विज्ञापन प्रतिशब्द का दर से समाचार पत्र पत्रिकन में छपेला। आकार के दृष्टि से विज्ञापन एक कालमी, दू कॉलमी, तीन कालमी, चौथाइ पन्ना के, आधा पन्ना के, पूरा पन्ना के, एक से अधिक पन्ना के हो सकेला आ ओह सब के आकार के हिसाब विज्ञापन दर तय होला।

उदाहरण- हेनहूँ झाँकीं। कायम चूर्ण खाईं गैस भगाईं।

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

श्रव्य माध्यम के विज्ञापन खातिर रेडियो प्रमुख साधन बा। एकरा जरिये सरकारी व्यापारी चाहे रोजगारी विज्ञापन के प्रसारण होला। रेडियो पर

कवनो कार्यक्रम- समाचार चाहे दोसर कवनो कार्यक्रम के प्रसारण का पहिले, बीच में आ अंत में गीतात्मक, संगीतात्मक स्लोगन आधारित विज्ञापन चाहे संदेश दिहल जाला।

दृश्य श्रव्य माध्यम के विज्ञापन

दृश्य श्रव्य माध्यम मतलब दूरदर्शन, सिनेमा, वीडियो, केबल टीवी वगैरह के दायरा आउर सब माध्यमन के व्यापक भइला से सूचना विज्ञापनदाता के आ माध्यम के लाभ पहुँचावेला। संचार माध्यम के विज्ञापन से आर्थिक आय होला आ विज्ञापन देवे वाला के अपना उत्पाद के बिक्री बढ़ावे में मदद मिलेला। इ स्थिति रोजगार, किराया विवाह वगैरह के विज्ञापन सब के संदर्भ में भी सही बा काहें कि विज्ञापन देवेवालन के सम्पर्क एगो बड़ वर्ग से बढ़ेला जवना से उन्हन के सुपात्रन के चुनाव में आसानी होला।

ऊपर के व्याख्या के आधार पर कहल जा सकेला कि विज्ञापन जनसंचार के कई एक माध्यम से प्रचार करे के एगो उपादान ह जवना में खास तरह के सूचना होले। एह सूचनन के प्रकाशित-प्रसारित करे खातिर कुछ ना कुछ धन लिहल जाला। ई धन शब्द संख्या स्थान चाहे समय के आधार पर वसूल कइल जाला।

विज्ञापन के वर्गीकरण

जनसंचार के माध्यम के आधार पर विज्ञापन के तीन वर्ग में बाँटल जा सकेला-दृश्य माध्यम सब के (विज्ञापन लिखल आ छपल) श्रव्यमाध्यम के विज्ञापन (टीवी, सिनेमा, कंप्यूटर वगैरह) दृश्य माध्यम सब के विज्ञापन

में लिखित मतलब हाथ के लिखल जइसे-देवाल पर लिखल, बोर्ड पर लिखल , बस-गाड़ी बिजली के खंभा वगैरह पर गेरू चूना चाहे पेंट वगैरह से लिखल विज्ञापन आ छपल (मुद्रित) जइसे पम्पलेट पोस्टर समाचार पत्र, पत्रिका वगैरह के विज्ञापन आवेला। एह विज्ञापन लिखे का ढ़ँग के अलावा भाषा, रंग आ चित्र के चमत्कार शामिल होला जवना से विज्ञापन पढ़ेवाला के भीतर विज्ञापन के विषय-वस्तु या उत्पाद प्राप्त करे के इच्छा प्रबल हो जाय।

एह सब पर विज्ञापन प्रसारित करे के दर आउर माध्यमन से बहुत अधिक होला। एह सब माध्यम से प्रसारित विज्ञापन के अउर श्रोता-दर्शक-उपभोक्ता पर अधिक असर होला।

बोध प्रश्न

1. विज्ञापन के अर्थ बताईं।
2. विज्ञापन के परिभाषा लिखीं।
3. विज्ञापन के प्रकार बताईं।
4. वर्तमान युग विज्ञापन युग ह। एह कथन के साबित करीं।

अनुवाद

कवनो भाषा में व्यक्त भाव चाहे विचार चाहे तथ्य जब लक्ष्य भाषा में व्यक्त होले मतलब प्रकट होले त ओकरा के अनुवाद कहल जाला। विद्वान लोग अनुवाद प्रक्रिया के सातगो चरण बतवले बा–पाठ–चयन, पाठ–पठन, पाठ–विश्लेषण, भाषांतरण, पुनः निरीक्षण, मिलान आ संशोधित–भाषांतरण। मतलब अनुवाद करे खातिर सबसे पहिले पाठ्य–सामग्री के चुनाव करके ओकरा ढंग से पढ़े आ खूब विश्लेषण कइला के बाद, भाषांतरण करे के होला। भाषांतरण के बाद भाषांतरित सामग्री के भाव, अर्थ, आशय, शिल्प आ आउर सब प्रकार का संदर्भन के समतुल्यता के निरीक्षण के बाद मूल पाठ से मिलान कर के जरूरत के मुताबिक भाषांतरण के संशोधित करत अनुवाद के काम पूरा कइल जाला।

अनुवाद के प्रकार

अइसे त पाठ्य–विस्तार, भाषा–स्तर, अनुवाद के प्रकृति, विषय वगैरह के आधार पर अनुवाद के कइगो भेद बतावल बा, जवना में मुख्य भेद बा–शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, वार्तानुवाद (आशुअनुवाद) आ रूपांतरण। कवनो अच्छा अनुवाद के गुण

होला-ओकर सहजता, निकटता, समग्रतुल्यता, मूल्यनिष्ठता, समूलता, सरलता, बोधगम्यता आ स्पष्टता। जवना भाषा में अनुवाद हो रहल बा, ओकर प्रकृति का मुताबिक शब्द आ वाक्य के चुने-लिखे के चाहीं। मूल भाषा का शब्दन के समानार्थक शब्द के हूबहू प्रयोग कइल जाय त शब्दानुवाद कहल जाई। जब मूल भाव के अनुवाद का भाषा में स्वतंत्र रूप में राखल जाय त ई भावानुवाद कहाई। जब लेख के सारांश के अनुवाद होई त ई सारानुवाद कहाई। जब मूल भाव के दोसरा भाषा में अपना ढंग से विस्तार से समुझा के लिखल जाय त एकरा के व्याख्यानुवाद भा टीका कहाई। पद्य के अनुवाद गद्यो में हो सकेला। एकरा के गद्यानुवाद चाहे भावानुवाद कहल जाई। जब एक विधा के रचना के अनुवाद दोसरा विधा में कइल जाय त ई रूपान्तर होई जइसे प्रेमचन्द के कहानी 'पंच परमेश्वर' के नाट्य रूपान्तर 'पंच परमेसर' बा।